

नो देव रत्नसः १, ३९, १९, ७, १०४, १. AV. 12, 3, 43. (अग्निः) लोकानतपत् Bṛh. P. 7, 3, 4. BHATT. 9, 2. नैनं पाप्मा तपति सर्वं पाप्मानं तपति Bṛh. Ā. Up. 4, 4, 23. — ५) Schmerz empfinden, — leiden: तपति न सा किशलयशय-नेन Git. 7, 31. तपस्यसि MBh. 8, 1794. — 6) Schmerz verursachen, schmerzen, quälen, peinigen, betrüben; beschädigen: तपन्ति माघा श्रेया घ्रातयः RV. 6, 59, 9. यदि वायुस्तत्प पूरुषस्य 7, 104, 15. नैनं कृताकृते तपतः Çat. Br. 14, 7, 2, 27. TAITT. UP. 2, 9. मा वीं तपत्प्रियं घ्रात्मापियत्सं RV. 1, 162, 20. तद्वै मा तात तपति पापं कर्म मया कृतम् Ait. Br. 7, 17. स्त्रियं दृष्ट्वायं कित्तुवं तंताय *erschmerzt den Spieler, wenn er ein Weib sieht* RV. 10, 34, 11. यद्य त-प्तो न तपति MBh. 1, 3323. न मां तपस्यत्यज्ञीवितम् 6175. 2, 1820. तताप स-र्वान्दीप्तौनाः 1, 6695. R. 2, 22, 10. Bṛh. P. 3, 25, 23. BHATT. 1, 23. तपति तनुगात्रि मदनस्वामनिशं मां पुनर्दृष्ट्येव Çāk. 65. तपति तापसं तपः Sch. zu P. 3, 1, 88. तपत्यादित्यवच्चैष (तपः) चतूषि च मनोसि च M. 7, 6. तपते तप्यते पुनः (देवेशः) MBh. 13, 750 (vgl. तप्याय तपनाय च 12, 10381). नेह ततः कलकस्तप्यते माम् 2, 1990. दृष्ट्वा मां न पुनर्नक्षुरात्मानं तप्तुमर्हति *sich betrüben* Bṛh. P. 7, 9, 53. तप्त *gequält, mitgenommen* H. 1493. वा-तातपभ्यां तताप्तम् R. 3, 55, 15. शङ्करनङ्गतैः Çāk. 55. Megh. 100. कारु-ण्येन मनस्तप्तम् Hip. 1, 23. अनुशयतस्तद्वदय Çāk. 85, 15. in astrol. Sinne VARĀH. BRH. S. 97, 17. pass. a) Schmerz empfinden, leiden; Schaden nehmen: ज्ञाया तप्यते कितवस्व्यं RV. 10, 34, 10. हृदयं तप्यते मे 95, 17. AV. 19, 56, 5. एतद्वै परमं तपो यद्याद्वितस्तप्यते Çat. Br. 14, 8, 44, 1. तस्य ना-नस्तप्यते RV. 1, 164, 13. तदिमामापदं प्राप्यभूशं तप्यामहेवयम् MBh. 1, 6217. 3, 10875. तप्यमान R. 1, 8, 1, 2, 69, 3. तपस्यसे वारिणो दृष्ट्वा पार्थवाणाप्रपी-डिताम् MBh. 4, 1668. Auch mit den Personalendungen des act.: कामार्-थः परिकीर्णो ऽयं तप्येयं तेन MBh. 1, 3165. दुःखैर्न तप्येन्न सुखैः प्रकृष्ये-त् 3585. 3, 15392. BṚHMAN. 1, 32. KATHĪS. 10, 4. — b) freiwillig Schmerz leiden, *sich kasteien, sich harten Uebungen unterwerfen*, gewöhnlich mit dem acc. तपस् P. 3, 1, 88. VOP. 23, 21. तपस्तप्यामहे AV. 7, 61, 2. TAITT. UP. 2, 6. M. 2, 167. Bṛh. P. 17, 5. MBh. 1, 2914. 8120. 3, 8335. 10894. 5, 7303. R. 2, 108, 16. Bṛh. P. 7, 3, 3. (ब्रह्मचारी) तपो ऽतिष्ठत्तप्यमानः समुद्रे AV. 11, 5, 26. SHADY. Br. 4, 1. R. 1, 38, 3. Çat. Br. 2, 2, 4, 1. ÇĀKṢH. Çā. 14, 6, 1. 12, 2. य एवं तपोतो वीर्यं विद्वास्तप्यते (so betont) TBh. 2, 2, 9, 3. एकाष्टका तपसा तप्यमाना AV. 3, 10, 12. सो ऽतप्यत ततो घोरम् R. GORR. 1, 58, 1. किमर्थं तप्यसे R. 1, 55, 14. तप्यमान (ohne तपस्) 57, 14. 64, 20. Auch mit den Endungen des act.: तपो ऽतप्यत् MBh. 3, 13492. तपस्त-प्येत् 8233. तपस्तप्यति देवेशे R. 1, 38, 1. R. GORR. 1, 26, 6. तप्यत्सम् (ohne तपस्) R. 1, 62, 3. Generelle Formen: अतप्त तपस्तापसः P. 3, 1, 65. Sch. VOP. 23, 21. तपस्तेपे MBh. 1, 3881. 5, 7346. R. 1, 55, 12. 61, 4. 62, 28. BRAH-MA-P. 50, 5. तेपाते Bṛh. P. 3, 4, 22. तपस्ये MBh. 1, 4781. 5, 7359. R. 1, 61, 2; vgl. u. 7. आत्त, तेषान oder तप्त *der sich kasteit hat* Çat. Br. 6, 1, 2, 8. 10, 4, 4, 2. 6, 5, 6. 13, 1, 5, 1. KHĀND. UP. 4, 10, 2. — 7) sich kasteien u. s. w.; med.: यत्रासौ तपते मुनिः BRAHMA-P. 51, 2. act.: तताप परमं राम तपोव-नमुपाश्रितः R. GORR. 1, 58, 4. तपीयांस्तपताम् Bṛh. P. 2, 9, 8. Gewöhnlich in Verbindung mit dem acc. तपस्: देवेशं तपत्तं तप उत्तमम् HARIV. 14868. उग्रं तेपुस्तपः MBh. 1, 7625. तपस्यावा विपुलं तपः 4619. BENF. Chr. 9, 42. R. GORR. 1, 63, 2. तपस्तपस्यन् M. 2, 166. तपस्तप्तुम् MBh. in BENF. Chr. 11, 14. तपस्तप्त्वा TAITT. UP. 2, 6. M. 1, 33. 34. 94. R. 1, 62, 6. तप्त mit pass. Bed.: तपश्च सुमरुत्तप्तम् R. 1, 57, 8. MBh. 5, 7147. तपसैव सुततेन मुच्यते

किल्बिषात्ततः M. 11, 239. अतप्ततपस् adj. ĪNDRA. 1, 17.

caus. तार्यपति und ऽते DHĪTUP. 34, 12. 1) erwärmen, erhitzen KAUC. 26. 29. यस्तं इध्मं जग्मर्त्सिषिदुनो मूर्धनं वा ततपते (1) त्वाया RV. 4, 2, 6. गात्रापयतापयत् MBh. 12, 5536. KATHĪS. 23, 94. न हि तापयितुं शक्यं सा-गराम्भस्तृणोत्कया HIT. I, 81. तापितो भिद्यते ऽश्मा VARĀH. BRH. S. 53, 117. — 2) versengen, durch Hitze verzehren, — quälen; peinigen, in Un-ruhe versetzen, Jmd zusetzen: तीक्ष्णः पटुर्दिनकरः करैस्तापयते जगत् R. 6, 11, 44. प्रचाडसूर्यातपतापिता मही R. 1, 10. मृगाः प्रचाडतपतापि-ता भृशम् 11. विषाग्निसूर्यातपतापितः कषी 19. अयं हि मां तापयते समुत्थि-तस्तनुशोकप्रभवा ऊताशनः R. 2, 43, 20. तत्कृते मदनश्चैव शोकचित्ता च राधवम् । तापयन्ति मरुत्मानमग्नागारमिवाग्नयः ॥ 5, 32, 36. शत्रूणां ता-पयन्मनः AV. 19, 28, 2. मनस्तापयतीव मे MBh. 4, 1755. लोकाश्च तापया-न्म् 15, 855. तापयन्पाण्डुपुत्रांस्त्वं रश्मिवाग्निव तेजसा 3, 14785. (पाण्ड-वाः) पृथिवीपालोस्तापयन्तः स्वतेजसा 1, 8062. तापयामास तांल्लोकांस्सदे-वामुरमानुषान् 6831. (तप्यमानो मरुत्तपः) सुभृशं तापयामास शक्रम् 2914. BENF. Chr. 46, 23. BRAHMA-P. 50, 12. त्वं हि तीक्ष्णो तपसा प्रजास्तापयसे MBh. 1, 1571. (इन्द्रियैः) तैर्यं ताप्यते लोको नक्षत्राणि यद्वैरिव 3, 1148. (कुरुपाण्डवाः) पुनर्युद्धाय संज्ञमुस्तापयानाः परस्परम् 6, 2120. सा तं नित्य-मतापयत् KATHĪS. 23, 36. कोङ्कणांस्सत तापयन् RĀGA-TAR. 4, 159. तापिता-रातिभूपाल 3, 477. प्रतापतापिताराति 4, 10. रत्नोभिस्तापिताः BHATT. 8, 13. तापितः कन्दर्पेण Git. 11, 22. चित्तं सुचिरं तापतापितम् Bṛh. P. 8, 5, 13. (अर्थः) तापयन्ति विपत्तिषु HIT. I, 172. ज्ञान्यन्तीतपे धनुः RV. 8, 61, 4. — 3) sich kasteien, sich harten Uebungen aussetzen: यो ह्यातस्तापयेत्तत्र MBh. 3, 8199. — intens. heftigen Schmerz empfin- den, — leiden, sich in grosser Unruhe befinden: मम तातप्यमानस्य पु-त्रार्थं नास्ति वै सुखम् R. 1, 11, 8. सुहृन्मथितरेषुसुशोणादद्या तातप्यमानम-कोरारगनक्रचक्रः (उदधिः) Bṛh. P. 2, 7, 24.

— अति 1) heftig brennen, eine grosse Gluth von sich geben: अविषष्ट्योष्-रादित्यो यावन्नातितपत्यसौ । तावदेवेत इच्छामो गन्तव्ये ऽनुमतं त्वया ॥ R. 3, 12, 8. शं तप माति तपो अग्ने AV. 18, 2, 36. — 2) erwärmen, stark erhitzen: रोहितो अत्यंतपदिवम् AV. 13, 2, 40. नरके — उपर्यधस्तादग्-नीभ्यामतिताप्यमाने Bṛh. P. 5, 26, 14. — 3) stark mitnehmen: अतिततया गिरा *mit sehr angegriffener Stimme* R. 3, 66, 26. — caus. stark erwär- men, — erhitzen: तेजस्त्वभ्यधिकं तात नित्यमेव विवस्वतः । येनातिता-पयामास त्रीन् लोकांस्त्वप्यात्तमः ॥ HARIV. 330. लोक्ष्पाण्डे यथा वक्रिः प्रविश्य ह्यतितापयेत् MBh. 14, 506.

— अनु 1) erhitzen: कुम्भीमनुतापम् Suçr. 2, 181, 14. — 2) Jmd zusetzen AV. 19, 49, 7. — 3) pass. Schmerz empfinden, sich grämen, sich abhär- men, insbes. über eine selbstverübte That, Reue empfinden: अनुतप्ये भृशं तात तव घोरेण कर्मणा MBh. 3, 13720. कृत्वेव ब्राह्मणां कामात्स्य-ष्ठाग्निमिव पाणिना । अन्वतप्यत धर्मात्मा पुत्रं संचित्य तापसम् ॥ R. 2, 42, 11. न हि मृत्युं तथा राजा श्रुत्वा वै सो ऽन्वतप्यत । अशोचदमरप्रब्यो य-था कृत्वेकं कर्म तत् ॥ MBh. 1, 1750. यस्त्वाम् — वनं प्रस्थाप्य दुष्टात्मा ना-न्वतप्यत दुर्मतिः 3, 992. VIKR. 46. KATHĪS. 22, 238. Bṛh. P. 4, 28, 12 (BUANOUF: *fut atteint par le feu*; vgl. u. उप). 9, 8, 18. भृशमनुतप्यमानं श्राद्धं 5, 8, 27. अन्वतपत् P. 3, 1, 65. VOP. 24, 4. Mit der Personalendung des act.: धातर्स्ते ऽनुनप्यन्ति त्वां विना MBh. 1, 5055. इति पुत्रकृताधेन सो ऽनुतप्तः Bṛh. P. 4, 18, 19. — 4) pass. sich grämen um, sich sehnen nach; mit dem acc.: